बातां में भूगोळ

हरीश भादानी

धरती प्रकाशन

प्रकाशक : धरती प्रकाशन, गंगाशहर, बीकानेर (राजस्थान) / मुद्रक : एस. एन. प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032 / आवरण : सन्नू / संस्करण : पैलो, 1984 / मोल : पच्चीस रुपिया मात्र ।

BATHAN MEN BHOOGOL (POEMS) : HARISH BHADANI Price : 25/-

टीप

रेत रै समंदर रौ पांणी

खाथी चाल रे : 9 / समंदर थू : समदर हू 11 / नित-नेम · 14 /
चोथो जारज : 16 / म्हारी हेमाणी जूण : 21 /
तिरथाळा तावडै रा : 23 / औतार जाम्या : 25

हूणियै रा होरठा

33-42

बोलै सरणाटौ

बोलै सरणाटो : 45 / थारै लावा जोड् हाथ : 47 /
हेलो पाड़ रे : 49 / आथर बोल : आथर बाच : 51 /
चाल रे चाल : 53 / करसा बोल : मजूरा बोल : 55

दे हूंकारो हूणिया

59-88

···कोडी नगरै रै
फाटी है
अतरी लाबी जाड़
दोमैं बत्तीमू दात
गंगा रै पाट-सो हबोळा खातौ
थाको बोलै· बोलै··· ··

रेत रै समंदर रौ पांणी

खाथौ चाल रे

खाथौ चाल रे कमतरिया

देखलै सीव
पाछौ घिरग्यो है
रंभावतौ रेवड़
  उठतै रेतड़ सूं
कवळाइजै उजास
सुवौ सिझ्या
मुहागण नीं चढै कुवै
  भरियाई व्हैला
घड़िया टीपाटीप
वैठगी व्हैला
हाडौ कठौती मांड
चाल'''कमज्या रा धणी चाल
खाथौ-खाथौ चाल

ऊभगी व्हैला
थरकण थांम मथली
  अंवळाई में
दीसै कठैई छियां'''तौ
हाका पाड़ती भाजै सामै पगां
टेरां माथै टेर
भरताई व्हैला
तेजौ हरियौ मूवटी

जाणं उगेरी आरती
देख···या देव
सरणाटे री छाटी
झाड़ती उतरै
भीता माथै रात
रायेला आळा-आरा
भर दंली थाळी हथाळी
देवेली कवा
जड दंली सगळा दूधाळा दात
खाथौ चाल
दीवै रा देवता
होताई चुडलै रै हाथा जोत
सैचन्नण होसी
चूलौ-आगणौ
चाल·········
आखं घर री
उडीका रा एकल चित्राम
खाथौ-खाथौ चाल
खाथौ चाल रे कमतरिया !

समंदर थूं : समंदर हूं

थू..........
मच चढियोडो
साव उघाड़ो नागो
दूर दिसावां तांई
सूतो दीसै...

नेड़ो तो आंटीज्यो आवै
पड़ै पछाड़ां खा-खा
लूरलै मखमलिया माटी
झागूंटा थूक जावै

बोलो नीं रेवै एक पळ
घंघावतो रेवै
सुणै है कुण
उछांचळी छोळां-सा
थारा बोल

थू..........
हँसतो-हँसतो
जवड़ा पसार
गिट जावै जाज
जूंण री खातर
थारो पताळ छाणती
नांवां, मछेरा
डकार नीं लेवै
उडीकां सुपनां रा

जगता दीवा बुझावै थू
थू·········
कोई नी जाणं
कणं भुआळी स्वाय
रमझोळती वाडघा खिडावै
घरकोला ढावै
मार झपट्टा
तोड लै मगळसूत
थू·········
लागं तो निरमळ नीर
चाखता
थू-थू खारो
नाव तो समदर
अतस तक खारो
सभाव नागो !
अर हूं·········
ऊपर सू हुळक केसरिया
म्हारै हियै
पताळ······
अमरत पाणी सू
तिरिया-मिरिया
वारे री बाट जोवै······
हूं·········
नूता देवू, उतारू
खाली वारा
हूं भरीजू
गावतो-गांवतो चढू
धरमजला वरकूचा
आंवतो दीसू
"आयो···आयो···
वठै वो खोली खोलै

अठीनै
हूँ खळकीजू कूडचां-देगा
मैंदी सूं राच्या
चुडलै सूं भरिया हाथ वाजै
लडावै म्हनै
गावै 'पिणहारो'

थूं...... ...
पाणी रो समंदर
हूँ.........
रेत रे समदर रो पांणी

हूँ...... ...
म्हारी वाड़्यां रो रमझोळ
आंख रो मोती
हियै रो हेत
बाथां रो बळ
चेरे रो मांण
खेत रो सोनो

हूँ.........
म्हारै आखै वास री
जूण रो बेली
दुखती रगां
मुग्धां सूं फाटतो हेजड़
घूमर...डांडिया...रम्मत
अर थूं.........
कतरा गुण-गोत थारा
बोल नीं
घंघावना घमंडीराम बोल
अणथाये
पताळ रा धणी बोल...

समदर थूं...
क' समदर हूँ !

नित-नेम

थारो-म्हारो नित-नेम
आ, भळै वाथेड़ा करां !

खायली आंधी
पीयली लूआ
पूछलै मूढै लाग्योड़ी झूठ
रगड हथाळयां
झाडलै चंरै चेटीज्या
काळा-पीळा लेवड़ा
थारो-म्हारा नित-नेम
आ भळै वाथेड़ा करां ।

बीज्योडी बाजरी
मतीरा, मोठां नै
लांपो देग्यो काळ
आ, लूरलां
जाळ क' खेजड़ी रो डील
छाल नै कूट पीयलां टिक्कड
सिजोयला सिणियो
वांधा, वंधै जियाइँ वाथा पेट रै पाटी
थारो-म्हारो नित-नेम
आ, भळै वाथेड़ा करा !

आव चालां
राज रै सिरे-थान

वणं तमोळा मेड्यां
अकासी माळिया वणं
आंपा अडाण वणा
माथै ईंटां चूनै रो भारो
नीचै चौथोजो जूण ढोवा
थारो-म्हारो नित-नेम
आ, भळै वाथेड़ा करां !

थारै-म्हारै
दुखां सू दूबळा दाता
पगोथिया सांटता चढै रास
रास सू वाचै

थारै-म्हारै खातर
बिधि-बिधान
नांख
वातां रै ठंडे भोभर माथै
नाखदै धोवा-धोवा धूड़
थारो-म्हारो नित-नेम
आ, भळै वाथेड़ा करां !

चोथौ जारज

पूरब री पिरोळ
        खुलता-खुलतां
उड़गी चिड़कोली आंख्यां.........

राख्योडी सीध
कसो, कुवाड़ा साभ
हुयग्यो बयीर
धरती रो धणी.........
....

टुरगी लारै
काकी, भोजाई
डांग रै सायरै बाबो......

नी दीसै पाळ
खिडियौडी बाड़
खेत आया.........
कै' आया उजाड़.........

देखै एक नै दूजौ
निजरा रै
सूनै झरोखा में आगोतर
आगोतर...ओ...आगोतर

कसमसतै छोटियै
तरणाटी खा'र

कसिया कोछा
      एकै सागै
सगळां रै डोलां
तिरछ तड़कीजो
हथाळयां सबगी
खोसण लाग्या
मठोठी दे'र बूझा,

साव उघाड़ा खेलूणा
पगल्या-पगल्या
रमता-रमता
चुग-चुग फेंकग्या
बैरी भाठा-डग्गड़
थप-थप देयनै
बिछाई गाभण माटी

हूँई-हूँई
हूँईसा वज्जर भीवै
पाड़दी पाळ चारूंमेर
दांतळ सूं भांज
सूकी सणाट झाड़ियां
खूंट सूं खूंट
चिणदी वाड़—
टीडी फाकै नै
अब कै.........
फाकाई करणा पड़सी
      ऊभो गुमेज

टग-टगता हांफीज्या
सूरज रा सातूं घोड़ा
मूंडै रा झाग झरग्या
      डोलां रै माथै
बूढार्त सूरज दीवो साख
हायां-पगां

आंख्या नैं जोत
भळै रचायो खेत
धरती रै धणी

आंख्या मे हिलकै हेज नैं
निजर नी लागै
फाडै तावडै री
झळमळतै घूवटै री ओट दिया
ढाक खारटियौ
आई छोटोड़ी
दीवी टिचकारी

जाळ री छिया
वजवजतै चुडलै
थाळी विछा'र पुरसी
जतना री रोटयां-राब
तिरिया-मिरिया
छाछ रो कुलडियौ
पेट रै पाण लागो
भोजी रसीजी तिस

बैठग्या सगळा
पगत जोड
हुयग्या उडीक
अबकै......
अबकै वैगो मांडैलो
काळी कळायण आभौ

वावो विछाण लाग्यो
धोळै दिन
सुपना री लाबी-चौड़ी चानणी
काले वोलैली
मिदर रै पीपळ सुगनड़ी

अवकं·········
अरडा'र पड़ैला आभौ
"धाया-धाया वापजी"
धोकेला आखौ गांव
फाटेला खेता में
      हरियो टाच सोनो

सांसां री लीकां पाड़ी
पाडता गया
गिणताई रैया
      छाट री घड़ी

गाजणौ-गरड़ाणौ किसौ
चं'रै री छांव तक
नी छीपण दीवो
उडीकतां-उडीकतां
आयां रै आगै
      आया तिरवाळा

नीं आई
आणौई नी थो वीनै
      आई···सागण वा ही
धाड़ैतण आई
पैरचौड़ी
काळा-पीळा धावळा

भैज्या आगूच
एक रै लारै एक
आंधळघोटा भतूळिया
      वेंयग्या
भूंआळौ घा-घा·········

चड़ियोडी पूठ आई
हूंआटा-खेंग्राटा करतो

आपरा गाभा फैंक
गाव रा टापरा
छप्पर पैर नाची

ओरा, वरसाळी
पाधरा करतो
रडकी बियाई
रळकीज रळकी
सूतगो
आंख्यां काळजो
खेता री आंता
दाडगी कूआ
छाटो तक नी रैयो
आसूडां रो...... ...

माटी री कूख मे
सोनळिया भळको दीसताई
मच चढगी धाडैतण
हेमांणी माटी सू
खूजा गोयळिया भरिया
फेरियो झाड्
करियो पणीढो ऊधो
धोवां-धोवा
नांखदी चूलै में राख

जांवती-जांवती सूपगी
चोकलिये बैठी
झुरती माऊ नै
आपरो चौयो जारज

म्हारी हेमांणी जूंण

हूं···कई
कोरो डूंगर
झाल्योडो खभो
खेजड़ो···जाळ···कै' आक
कै तळैचैठी ज्यो सिणियो
तूंबे री वेल·········?

म्हारी उघाड़ी
पळपळतो हेमांणी काळजो देखतांई
सूरज री लाडेसर किरत्यां
उतरै करै रमझोळ
दूर सूं देखै काच
कंपता जावै···
यो रंगो पांणी रो छळावो······

पांणी कठै है अठै
चौखूंट पड़ियो है
सूको सून्याड़
बरमां-बरसां
बादळ री लीरी तक रो नी पासंग······

साचो कायां री देखी-कंयी
पण दीठ नै दोसं

सूकै सरणाट में
जागती बैठी
तावडियो साच
कै' बादळ रै वसू नी रैयी
म्हारी जूण
देखतो आयो है सूरज बाप
म्हारा, हा म्हारा कमतर

धर मजला, घर कूचां
दिनूगै-सिझ्या
जा पूगै पाताळ
भरलै बारे मे
खळ-खळ नाखदै देगां में

आडा आयोड़ा
काच उतारै दीठ
म्हारै पणोढै
कांसी री थाळी
म्हारी आख्या मे झाकै तो दीसै
नीलम आभो
आभै पसरयोड़ी हरियल बेलां
बेला में पाणी
पाणी सू तिरिया-मिरिया
म्हारी हेमांणी जूण

तिरवाळा तावड़ै रा

धम-धम बाजी
सईकां बाजो, बाजै अजू ही
पण नी फाटचो म्हारो काळजो–

पुतियो पोतीजै
काळ रो कळमस चेरै
आख्या में पीळियो ऊधीजै आए साल

रेत री पाख्यां बैठ देख्या
अठी-उठी रा खूट
सै'रा रा सै'र नाप्या,
पूछ्यो चलवां-वैजारां रो
गादी ओपता सैणा नै
म्हारी जूंण मू आंध्यां
कद तांई करैला खेला
आगळी सू नीकी जको
नैर री मरोड़
कद हुवैला ऊभी पाळ
म्हारा आगोतर मिटते
विना दांतां रै बांवी सरीखे
वाकै आगे कद लागैला डाटो

धड़कां री दीठ में
दीस्यो रातींदो

म्हे ही लपेटी
चूलै री राख री पाटी
पूरवलां धोता-धोता पड़गी चांदथा माथै

दोनो समदरियै पूठ
बी दिन सू
पछवाडै पडियो कळपीजू
पूरव-सा सोंवता धणिया
की तो बोलो।
कतरा सईका आता रैसी
म्हारी आख्या में
तिरवाळा तावडै रा ?

औतार जाम्या

जद जाम्या औतार जाम्या
मखमलिया डूंगरां
धोळां फाडा-सा
भाठाभाळी धरती
रज्जी नी नगी
थांरी पगथळचां रैं
आंख्यां में फूस नी रडक्यौ
कवै में कोकरू आणी कसौक

सिर धोक्या
पूरवला धोया ऊमर ओसीजी
आगोतर घड़िया
चरणां रैं धोवण सूं
आला-गीला
चढियोड़ी तुलछी-भिसरी रैं
छत्तीसां भोगां सूं
उफणतो आफरो

सिरीमुख री वाण्यां सुण-सुण
जूणां पर जूंणां जीया
कांधां रैं तमोळैं ऊभी
आंगळी बताई सीध
जुग चाल्या
किलविलता चालताई रैंया
घर मजलां नैं घर कूचां नैं घर मजलां···

सूठ रा गाठिया भाग्या बिना
अजवाण री
फाक्या गिटिया बिना
गोरी गाय रौ
चूटियो चाटया बिना
जतरो नाखोज्यौ
मानीज्यौ कीडी नगरो
थूड रै झाल्लोडौ
आभै पटक्यो व्हैला

म्हैं नी जाणू
कुण ही वा वेमाता
जी पर धणी
धणियाप नो घणाई रैया
पण पूरा सू
परोटणआळै आदमी नै
जद-जद हेला पाड्या
देवळयां
होंता गया औतार
दुखता काना मे सीच लैता तेल
मांडणा मड्योड़ी
छाता मे फसा'र दीदा
गैर-गभीर होता
डवडवता देख्या करता
ग्वायां ई खायांआळै
कौड़ीलोक रा चितराम
अमूजता उफत्योडा
बरदान रा
उठियोड़ा हाथ जडता
काच रा किवाड नै जाळयां-झरोखा

हू ऽऽ जिलम्यो आखडियो
मरता आखडतो

आखड़तां-आखड़तां
    भणियो-गुणियो
अवकं तो वोलतोई
चामड़ी-जर फाड़ पड़ियो
पड़तांई चालण लाग्यो
        हूं सुकदेव…
कै मौसम री मार सूं
गरभ ठेरै कै कूख फाटै
भळं औतार जामै

चालतां-चालतां
जुगां रा कांधा घसीज्या
डागळा-तमोळा
    थोड़ा नीचा पड़ग्या
पगां नै
    पगोथिया वणा'र
छाती तांई आ चढियो कीड़ी नगरो

औतारां री सांसां अमूजी
धड़को उपड़ियो जद-जद
        खावणी पड़ी
पाकी उमर में
सठवा सूठ
तवै तळनी पड़ी अजवाण
लोटड्यां ऊंधावड़ी पड़ी चूंटियै री
    थाळ्यां फूटी
थोथ रा ठांव नै
    गळा पीटीज्या
भळं जाम्यो मायड़ औतार

पण किणी नीं देख्यो
म्हारो जामण रो
    जापो-स्वाद

भूंगडा-फाकां सू करती मासवो
मूंढं रै माथै चिणती
खोखरे दातां री भीत
अकूरड़ो रै आसरै पसरती
म्हारी जागण

सम्हळाया टाट छीतरा फरोळ
गोडा घसीट
ऊभता-ऊभता
तडग हुयग्यौ
छ्वीली पाटी रै
धूडो-मोडं
पेट री तारया मे
गुलगाठया घालतो
सुकदेव बोलू सुणज्यो
सुणज्यो धरमां रै
धोरा मू जाम्यां
औतारा सुणज्यो
कळजुग री कळा लगा'र
चालण लाग्यो है कीड़ी नगरो

म्हारे माय म्हारे बारै
पूरब-पच्छिम
दिखणादे-उत्तर चारू मेर
कीडी नगरै रा
लाग्योडा थागो-थाग
थांरै काना री ठेठयां काढण
उठग्या हाथा मै
ले'र हाका
सुणज्यो की थमता सुणज्यो
जग रै माथै रा मोड़
रैवता आया
ठाणा-ठिकाणां

देवळयां-भोपां सुणज्यौ
रेलां-पुळां सूं
वेसी सांतरो
सैंतीरा हुयग्यौ
कीड़ी नगरो बोलै···बोलै···

थांरी छोडचौड़ी झूठ—
तुलछी-मिसरी सू
भभका मार नी चालैला अवै
ओझरघां रां इंजण
हयाळी
हुयगी है हथ्याळ
नी पसरैला
नी हुवैला अवै आला-गीला
सूखी-चणाट
ठाठघा रा ठट्ठ
थारै चरणामत सू
नी वणाण दैला
काधां रै माथै मेडघां-माळिया

बोलतो-बोलतो चालै
"म्हारै परवार नीं वणैला अवै
कैरोई इतियास
चेतो बापरग्यो म्हनै
कीकर तोड़ीजै
काच रा किवाड़ नै जाळघां-झरोखा
हाफै थरपीज्या धणियां
आंख्यां उघाड़ देखो
कीडी नगरै रै
फाटी है
अनरी लांबी जाड
दीसै वत्तीसू दांत
गंगा रै पाट सी

हवोळा खातो
बाको बोलै···बोलै······

मानखै रै नांव रौ
लिखायो पट्टो
खोलणोई पड़सी
पोथ्या-तिजूरचा में
राख्या इधकार
म्हारै हाथा मे सोपणाई पड़सी
म्हे भरियो है
बाथा मे भूगोळ
म्हारी कमज्या रै माथै
म्हारौ···हां म्हारौ
धणियाप रैसी

पूठ री घोडी चढिया
वीन राजा
माटी रै माथै
फूठरा-फरा पगल्या
माडणाई पडसी
जद जिणसी
माणसिया जिणसी मायड री कूख
देवळया सऊकार
ठकराई रा होकड़ा
नी चढैला अबै चैरा रै माथै
मिनखा रै परवार में
सगळा री हाती-पांती
बरोबर रैसी
मिनखा रै नांव सू
बाजैली धरती
नै देस नै आखी दुनिया

'''लीलां मरुसी काळजें
खुभसी वूठा बैंण
राख्या एक रुडोक
जीती जाजै डूणिया'''

डूणियै रा डोरठा

सूकै अकरै तावड़ै
हाड मांस रा वोल
रगड़चां सांसो सांस
जगै हुगड़ता हूणिया

आखर तो खीरां जिसा
चुगतां लागै डाभ
आला लीला वाळ
जगरो तापै हूणिया

आखर रो सत ऊजळो
आखर रूप अकूत
आखर-चेतो एक
हिरदै धारै हूणिया

आखर जुड़ बोली वणै
वोली उपजै हेत
हेत जूण रो सार
होठां राखै हूणिया

हेत हियै में ऊपजै
हुवै रगत-सो लाल
उगटै हुवै हजार
रातो एक न हूणिया

भूं नी जाणै हेत री
वारखड़ी रो अर्थ
आखर लिखै अणूत
अबखी लागै हूणिया

थै नीं देखी मावडी
थै नी देख्यौ बाप
हेलाहेल मचा'र
थूक विलोवै हूणिया

हर तक गिटलै हेत री
जीमैं मसळ पिछाण
लेवै नहीं डकार
कासारोगी हूणिया

दिन में तो चैरा गुमैं
हर गुमग्या अंधार
सैं'र है क सून्याड
थू कई जोवैं हूणिया

हेत हवोळा खांवतौ
लैरघां लता बोल
कागां भर-भर चोंच
झील निवैडी हूणिया

जारै हाथा माडिया
सास रम्या चितराम
उगट्यां उगट्या ले'र
चढ्या हाट जा हूणिया

आंख्यां खातर माडिया
आख्या सू चितराम
एकलखोरी वाण
राख लीपगी हूणिया

खण-खण करतै तेल सूं
चलै गिस्त री रेल
छोडा आखर ले'र
बण्यौ डलेवर हूणिया

पांणी झुर-झुर सूकग्या
रेत-कंवळ रा नैण
देख्या सूना डैर
उग्या कोकरू हूणिया

बसकां सू जूंणा भरी
जी निसखारा नाख
कद लेवैला एक
सांस नचीती हूणिया

मनवंतर तो मापिया
पगा पांयडो वांध
कद लेवैली सांस
एक विसाई हूणिया।

हुयौ गिस्टियो मानखो
घस एड्यां वस हाथ
कुण कीना ए डोळ
पूछै दानां हूणिया

जकां न देखो कळपती
चींती कायाकळ्प
आखर रच्या अणूत
आंख्यां मीच्यां हूणिया

धूसा साथै वाजता
गढ कोटां रा बोल
गाजै माड अडाण
नूवा राजा हूणिया

पैला राणी जामती
अब जामै सदूक
सागी राजा राज
गाभा वदळया हूणिया

पाचै वरसै जेवडा
लटकै वजै चुणाव
लोकराज रै मैं'ल
लूठा पूगै हूणिया

बिना निसरणी रा वण्या
लोकराज रा मैं'ल
देखै आख्या फाड़
"संचासै" सू हूणिया

हाका करता रा फटै
पेट काळजा रोज
बंदूका कानून
तीया देवै हूणिया

भापणआळी मीन्द में
रोज वुणीजै थांन
मर्सा आदमी दीठ
खफण लंगोटी हूणिया

गोठ योजना री करै
सोनो रूपो रांध
चाखण में सौ जीम
झोळ पुरसदै हूणिया

वटिया आलू प्याज रा
उड़ना तिरणा जाज
देखै चकरीवम्म
हवा खांवता हूणिया

खुरसी री चरभर रमैं
खेवट पंगत जोड़
लोकराज री नाव
हवा भरोसे हूणिया

गूंगी खुरसी दावलै
सुरता वोली दोठ
विना डोळ रो देख
मिनखाचारो हूणिया

काळ पुरजा हाका करै
गोखै वयां हिसाव
फड़कै जद-जद होठ
जड़ै किवाड़ा हूणिया

सीटचा खुभतां ही जगै
भाजै पहिया होय
फिरै थाकलो लाद
थरकण नापै हूणिया

हाकम री हालै कलम
दिन रातीदो होय
लुळ-लुळ करै सलाम
रात तावडो हूणिया

हाकम री आंख्या अजब
वाचै घोर अंधार
तावडियै-सो सांच
लगै फारसी हूणिया

छाट एक नाखै नही
बैठै माडया बूक
इंदर रा ए डोळ
देखै रेतड हूणिया

सीयाळै में तापलै
रगड़ हाड सू हाड
ऊनाळै उकळीज
ठरै पसीणे हूणिया

गिट सीयाळै डांफरां
लू ऊनाळां पी'र
आया जुग-जुग जी'र
जुग-जुग जीसी हूणिया

गाभण हुयलै छांट सू
वाझ वाजती रेत
जामै हरियल टांच
मोठ वाजरी हूणिया

पीता गिटतोई रयौ
    खाया घणा धमीड
की तौ सांस उपाड़
    रोळा करलै हूणिया

कवळा कवळा तोड़िया
    ठरिया लिया मठार
लगा आगळी देख
    खण खण उकळ्या हूणिया

आता वळती आग नै
    लोवी हाथा थाम
फिर-फिर चारूमेर
    लाय लगासी हूणिया

लीला मडसी काळजै
    खुभसी वूठा बैण
राख्या एक उडीक
    जीतो जाजे हूणिया

म्हारी आख्या सू उडीक
    थारा हुनरी हाथ
सासा लियै परोट
    बजे हरावळ हूणिया

तन थाकै वेगो घणो
    तन रा ओछा लाभ
चालै मन री चाल
    अण थकियां ही हूणिया

आभौ बांध अगोछियै
नदियां आडी पाळ
मांडै घर परवार
सिरजणहारा हूणिया

आंध्या उमट उजाड़ दै
गिटै ताड़का वाढ
फिर-फिर निपजै जूण
सिरजणहारा हूणिया

भाठां तीरा तोप सू
मच्या घणा घमसाण
जीग्या परलै वीच
सिरजणहारा हूणिया

जकां पळीता वाळिया
वांनै बाळ्या काळ
जीग्या काळ अकाळ
सिरजणहारा हूणिया

जात-पात पूछै नही
देवळ अर रसूल
धरम ठगोरा वैठ
राड़ रचावै हूणिया

साच न वामण-वाणियों
ना तुरकन ना ढेढ
आखो एकल साच
मिनखाचारो हूणिया

थू करुणा री आंख सू
दूजा रा दुख देख
दीसैला साच्छात
मिनखाचारो हूणिया

मंदिर मस्जिद खोजता
दीनी उमर गंवाय
हियै विराजै साच
खोल किवाडा हूणिया

…रचियोड़ै सबदा रो अरथ वांचतौ
चारूमेर सुणातौ
धर, मजलाधर कूचा चाल
धर कूचा, धर मजला चाल…

बोलै सरणाटौ

बोलै सरणाटौ

ऊभा चारू खूंट
      धुंए रा डूंगर
बोलै सरणाटो

डरतो ऊगै डरचौ विसोजै
इकटंगियै बंधियोड़ो
      एकल सूरजड़ो
साखी ही गूगो
जद कूण भर्णं
लोहे रा कागद
      बोलै सरणाटो

हाथ पखारै आख चुगै
माणक-मोतीड़ा
धोरा रै समदरियै
      परवा-पछवा
उतर-उतर फेरै आंध्यांरा झाड़ू
होड़ करै धीरज री सासां
किया करै गोफणिया हाका
            बोलै सरणाटो

पगा मडोजो
डामर री दुनियावा पसरै
      मोड़ं-मोड़ं

आंगण ओढी लाज सम्हाळै
फाटचौड़ी थाकेलो
रोटी रौ चंदोमामो देखण नै
पथरावै सोनल सुपना
राज मजूरी राजा करसा रा
रोळा ही रोळा……
कुण देखै
कूण सुणै
चूलै रै सामै वजतो चूड़ो
वैठा मिनख मठोठ्या खावै
वोलै सरणाटौ

थारै लांवा जोड़ूं हाथ

थारै लावा जोड़ू हाथ
उनाळा थिडी-थिड़ी कर ऊभ
पगलिया लेले रे

थारी मावड़ लू वळता धोरां सू
सींचो सगळी रेत जी
थारो आंधी वंनड़ रा रोळा सुण
रूस्या रसिया पेत जी
पाळसियै में जवरा पूजू
क्वारै हाथ कळसिया ढोळदू
म्हारो जतनां चीत्यो थाळ
तीज रो घी सीज्योड़ो खींच
आमनी लेले रे
थारै लावा जोड़ू हाथ……

म्हारी भातो लेजाती भावज रो
रूड़ो रूप ममोलियो
कोढ़ी तावड़ियो भरै चूंटिया
घुरडै घिरै भतूळियो
जे तू वोलै वैरी थारै
ओळा और मखाणा घोळ दू
म्हारै डोवै रांधी राव
राव में मोळी-मोळी छाछ
सवड़का लेले रे

थारै लावा जोड़ू हाथ······

म्हारो अणमण पिणघट खड़ो उडीकै
सोनलदे पणिहार नै
म्हारो खूटी चढ़ियौड़ो ईढाणी
जोवै है सिणगार नै
जे तू बोलै तो चौभाटे
रोटो पेड़ा ढाळ दू
म्हारै आगणियै रमझोळ
मटक्या माडचौड़ी अणमोल
उतारो लेलें रे

थारै लावा जोड़ू हाथ
उनाळा थिड़ी-थिड़ी कर ऊभ
पगलिया लेले रे

हेलो पाड़ रे

वास-वास में हेलो पाड
धूड़ीमोड़ां हेलो पाड
मेघा राग उगार रे, घर-घर हेलो पाड़ रे
इन्दर आज पधार
इंदर आज पधार म्हारा वीरा
फिर-फिर हेलो पाड़ रे

आभो उमस कसीजेला
वादळिया परसीजेला
थू खुरपा कसी सभाळ ढांढां नें टिचकार
भाज्यो खेतां चाल रे
सिणिया वूझ उपाड़
सिणिया वूझ ऊपाड़ म्हारा वीरा
माठां नें मचकाव रे
घर-घर हेलो पाड़ रे

छाटधां छिर मिर नाचे
हिरण्या-मोर कुळाचे है
थूं पग-पग माटी वोज लै गोफणिया साध
मेडचां खड़ो रूरखाळ रे
रोटी-राव मठार
रोटी-राव मठारा म्हारा वीरा
भरो डकारा गाज रे
घर-घर हेलो पाड़ रे

सुण रमझोळां वाजै है
घूमर रमती लाजै है
थू कोछा ऊचा टाण उठजा लै हूंकार
लै लारै परवार रे
पाकी फसल्या झाड़
पाकी फसल्या झाड म्हारा वीरा
छाटचा भर-भर वाध रे
घर कोठा मे धान रे
मन रो अमी पकीजी है
हरिया-टाच मतीरां मे
वासां-वासा हेलो पाड
घूड़ीमोड़ा हेलो पाड
पंचायत री चौकी बैठ
मिसरी-सी गिर वाट रे
पाणी पी'र डकार रे
घर-घर हेलो पाड रे, फिर-फिर हेलो पाड़ रे

आखर बोल : आखर बांच

आ लिछमणिया आखर बोल
आ रे गामेड़ी रुघपतिया
      कळमस रो पाटो रै माथै
उजळा-उजळा आखर माड
माड्योड़ा अखरा नै बाच

आखर री आख्या नै दीसै
घर मे बारै
मन में कती अंधारो

आखर लावा हाथ करै
तिड़कावै तोड़ै
हिवै जड़योडी ताळो

आखर बाळ अंधारो
दप-दप दीपावै
मन-आगण
      ए ही वे आखर
बाण्यां बोलोज्या
ए ही आखर वंद मडीज्या
ए ही पोथी लिखियोड़ा है
      वार्णा और जूण रो सार आखर
आ लिछमणिया आखर बोल
मंघिया-किसना आखर बोल

आखर देवै
कसी समै री
पूरवला परखीजै

आखर हाथ लियां सूं
जूण-जूण रो
आगोतर राचीजै

आखर है जंगळ रा मंगळ
आखर मैं मगळ रो राज
आमैं जुगां-जुगा रो सांच

थू थारै जुग रो सत वाच
थू थारै जुग रो सत मांड

आ गोमेडी आखर जोड़
आ सैरातो आखर माड

चाल रे चाल

चाल रे चाल
गाव रा करसा चाल·· चाल
संरातो चाल
धर मजलां, धर कूचा चाल
धर कूचा, धर मजला चाल

ले आ पाटी
ओ लै कागद
वरतो थाम, क
ले लै कलम दवात

आखर मांड
आखर माड माडतो वोल
वोल वोलतो
आखर जोड

आखर-आखर सबद रचातो
रचियोड़ै सबदा रो अरथ वांचतो
चारूमेर सुणातो
धर मजला, धर कूचां चाल
धर कूचां, धर मजला चाल
चाल रे चाल
गाव रा करसा चाल···चाल

सैंराती चाल ।

अरथां मे
उगटं उजास
ओ उजास
आंख्यां (आज

आज आजतो
वाळ अंधारो
कळमस वाळै

चारूमेर
हियै आख्या में
किया चानणो
धर मजलां, धर कूचां चाल
चाल रे चाल
गाव रा करसा चाल'''चाल
सैंराती चाल

करसा वोल : मजूरा वोल

करसा वोल : हाळी वोल !
मजूरा वोल !

धरती थारी
थू बोजं है
थू सोनं है
निपज्योडो धन
धारो ही है
आ वा सगळी थारी कमज्या
थू धणियाप जतातो वोल
भल-भल
थू धणियाप जतातो वोल
करसा वोल ! हाळी बोल !
मजूरा वोल !

कुंण आया हा
किया लगाई
मन रं आडी
कूण बाधग्या
दो हाथा नै
थू वा साकळ खूटो खोल
तड़-तड़ साकळ खूंटो खोल
करसा वोल ! हाळी बोल !
मजूरा वोल !

सैंराती नै
वरसां ताई
आख उडीकी
छां छीपण नी आयौ कोई
छोड उडीक
भुजा भरोसै वोल !
जीवट भुजा भरोसै वोल !
करसा वोल ! हाळी वोल !
मजूरा वोल !

पो फाटै सू
सूई सिझ्या
खेती खडतौ
लूआ पीतो
तकली माथै
सूतो साध्या
खाट-खटुलो
मूज माडतौ
माटी खूद
माटी खूद खूंदतौ वोल
चाक फेरतौ
घड़िया घड़तौ घडतौ वोल !
सिस्टी रचतौ
परजापत-सो वोल !
आडी-तिरछी
लीक माडतौ वोल
गैरी-फीकी गेरू रगतौ वोल !
करसा वोल ! हाळी बोल !
मजूरा वोल !

लै चिणियोड़ो
लादो-भारो

मगरां छाटो
कदेक माथै
ले खारटियो
सीवां माथै सींच नापतो
सैरां माड पगलिया वोल !
गांव रा थभ
थभै सरसो वोल !
करसा वोल ! हाळी वोल !
मजूरा वोल !

चूलै-आंगण
आख काळजै
खेतां धोरा
आघ्या लूआ
घणो वाजली
कमज्या सुपना
जीव खायगी
की तो करडी
आंख देखतो वोल !
ऊभ, नुंवै उणियारा सामै वोल
धा रै सिरसा
ए उणियारा
क' ऊभी आडचा
ओळखतो वोल !
उत्तर पड़ूतर देतो वोल !
करसा वोल ! हाळी वोल !
मजूरा वोल !

पूरब री किरता
भरम कतरगो
फाटीजो पगतां जुड़गो
मिलग्या मजूरा-करसा

पाड़ा री मोच निकाळी
माटी रा पाणी बोल !
पाटा रै परियां
थू हबोळा खातौ बोल !
करसा बोल ! हाळी बोल !
मजूरा बोल !

थू बूझां री
बूठ बाळतौ बोल !
बळया काळजा
ठार ठारतौ बोल !
थू गावा रा
पगल्या होतौ बोल !
थू गांवा-सैरा नै
पगल्या देतौ बोल !
गण सू मोटो
गण-गण गुणतौ बोल !
करसा बोल ! हाळी बोल !
मजूरा बोल !

''आड्यां कलमा सू जका
नींवां बजाई ठोकी
काळ रा जडिया
किवाड पड्या'''

दे हूंकारो हूणिया

दे हूंकारो हूणिया

हामजो — तू कुण है भाया
अठै क्या बैठो गोडो ढाळ
अठै के काम थारो
अठै तो…अठैई

हूणियो — कंई लगाई अठै-अठै
अठै नी कोई थान
नी भाठो भैरूं धरपीज्यो
जाणै कुण
झाड़ पूछ्यो चोकलियो
अठैई है रातवासो म्हारो

हामजो — आयो वड़ो कमतरियो
करसी रातवासो
थारै खातर नी लीप्यो-पोत्यो
है कुण तूं
थारो नाव वता तो…

हूणियो — नाव रो कै वट लेसी ?
हूं तो हूणियो हूं

हामजो — ओ कै नाव होयो

एड़ो तो नांव
म्हे नी सुणियो पैला
देख्यौई कोनी कठैई
नांव तो वता सहो-साचो

हूणियो नूवोई आयो दीसै
म्हनै जाणै है आखो दुनिया,
हा, जकी आंख्या रै आडा काच
वै नी जाणै-पिछाणै
पण हू हूणियो
भल-भल हूणियो

हामजी सावळ बोलनी भाया
क्या आडी घालै
अठै क्या गोडी ढाळी
ई चौकलियै
नाटकिया आसी
नाटक···डरामो···समझ्यौ
तमासो करसी
हाऽऽऽ तो कई नाव थारो
के जात थारी

हूणियो कान है'क वेजका
वतायो नी हू हूणियो
साव साचो हूणियो
अर जात म्हारी···

भजनिया "हिन्दुन की हिन्दुआई देखी,
तुरकन की तुरकाई
कहे कबीर सुनो भाई साधो
कौन राह हम जाई
अरे इन दोउन राह न पाई

कबीरा दोनूं राह न पाई

हूणियो छांटो पड़ियो'क भळै सुणासी
आदमी तो दीसेई कोयनो
चाल्यो है, जात गोत पूछण, हांऽऽऽऽ

हामजो पण भला मानस
अठै अवार मोटचार आसो

तू थारै ठोड़-ठिकाणै जा
नाटक में
थारो कई काम
जात-गोत पूछो पिछाण सारू, ना वता
जात तो हुवैईज है
हमैं अठै सूं जा
थारै ठोड़ ठिकाणै जा

हूणियो वोलो रै···वोलो रै
आयो वूझाकड़
जात-गोत···गोत···जात
वेजका खोल'र सुण—
म्हारो नीं जात कोई
ना कोई गोत म्हारो
ठोड़ म्हारी···!
आ धूणी'क दूजी धूणी
पूरव-पच्छम, दिखणादे-उत्तर
चारूमेर रा संरा-गावा में
म्हारो वासो
इकटगिया मंना नीचै
आ हाडा सूं घसोजो
मुआळा मूं चिण्योड़ै
गढ़ा रै आसै-गार्में

घास, वांस, टाट रा
किलविलता किल्ला म्हारा…,
ओरा में, गुभारा में
विला में, सुरगा में
मसाण-अकूड़चा माथै
मिंदरा-मसीता
गंगा घाट रै पगोथ्यां माथै
जिलम्यौ, जियौ क
जिलमै, जीवै हूणियो

मजुरां रा टोळ हइसा-हइसा
हइ-हइ हइसा हइ-हइ हइसा
हइसा-हइसा
दोनू हाथा भाठा कूटां
पगां घूमरा माटी खूदां
कुण खूदै म्हारा काधा नै
दै गिणती रा पइसा
हइसा-हइसा
हइ-हइ हइसा : हइ-हइ हइसा

करी मजूरी गटकै दाढ़ी
चोटी जीमै ले'र सवड़का
करा भूख सूं वाथेड़ा
म्हे खावा रोज भचीड़ा
हइसा-हइसा
हइ-हइ हइसा : हइ-हइ हइसा

म्हे आखी ऊमर रा चाकर
तावडिये ठरियौड़ा ठाकर
लाज्या मरचा जिनावर भाजै
म्हारा देख कळाप

पण म्हारै वाकां मे उकळै
      हृइसा-हृइसा
हृद-हृद हृइसा : हृद-हृद हृइसा

हूणियो   ताका तोला कई करै
      सामै देख सामै··· ··
      ओ खूट···वो खूट
      धूड़ीमोड़ा···पिछोकड़ा देखतोई जा······
      सड़का माथै, गळी कूचळा
      चूलै आगै, चिमन्या नीचै
      भट्ठयां सू हथाई करता
            पेट रा तंबूरा
      नै ठीकरयां वजावै
            'मा' भारत रम्मै आठू पोर
      या खांप म्हारी
      वो फौज-फांटो म्हारो
      इकसार जारा डोळ
            सगळा हूणिया
      हूं वारे मायलो हूणियो
            हे म्हारो नाव हूणियो

हामजी   आपरोई दळियो दळसी
      की म्हारो सुणसी
            अटै नाटकिया आसी अर तू
      वैठो है वीचोवीच
      वैं येलो करसी
      तू थोड़ो सो परिया वैठ
            इतोई तो कयो तनै

हूणियो   हा, भइ, कयो तो इतोई······
      नाटक होसी···मोटयार आसी···
            वोलाराई तो···!

कवीर साव तुलछीदास जी भी वोलारा हा
नजीर साव हा
ए कैरी खाप रा वोलारा है···
    नागर, भारवा बोलैला कै मारू, डिंगल
वजासी की कडौ तवूरो

गेरिया — सूकै अकरै तावड़ै
    हाड़-मास रा वोल···फकीरा
रगड्यां सासो-सांस
    जगं हगड़ता हूणिया···भइ

आखर तो खीरा जिसा
    चुगतां लागै डाभ···फकीरा
आला लीला वाळ
    जगरो तापै हूणिया···भइ

हूणियो — म्हनै परयां बैठा'र
डरामो करसी ! देखू, म्हारै परवार
प्रगट्या कैंडा नाटकिया
    म्हनै टाळ करसी
किण भात री तमासी

हामजी — कुतरक ना कर
तमासो तो तनै
समझाण सारू कयो
असल तो नाटक है 'आधो आदमी'
    गजब राज रै लिख्योड़ो
नूवी ऊमर रा भणिया-गुणिया
चतर खेलारा
    खेलसी 'आधो आदमी'
तू तो देख्या विनाई करै टर्र···टर्र···

हूणियो　हूं करूं टर्र-टर्र
थारा साथीड़ा करसी
आधे आदमी सूं खेला
　　अर हूं करूं टर्र-टर्र……
कठै हुवै है आधो आदमी
म्हे तो कदै नी देख्यो
　　थे देख्यो है कई

हामजो　म्हे तो की नी जाणूं
नाटकिया-लिखारा रो ओ काम
　　हूं तो ना लिखारो ना नाटकियो
वरसां सूं वेल्हो, एकलो
आं म्हनै परोट्यो
　　तूं म्हनै आरो वंदोवस्तियो समझलै

हूणियो　हूंऽऽहू भी तो अबै समझ्यो
　　अपणापै रो मारयो
गूंगी टाड़ है तू
लूरै सूं चालै-जीवै
भलाई हुवैला थारा साथी संगी
पण मिनखाजूण रै पेटै में
　　मोट्यारां रै मूंडै सूं
आधे आदमी री वात
म्हनै तो घणी अवखी लागै…………
　　लै, देख, पैला तो तूं ई देख—
दीदा रा दीया बाळ
खुल्लै चोभाटै
साव सावत ऊभो
मिनखाजूण रो तमासो हूं हूणियो
जात-गोत सगळाई एकै सागै

नाव म्हारौ डूंणियो
म्हारी जात डूंणियो······म्हारौ गोत डूंणियो···
काना री ठेठी झाड़ सुण रे
    स्याणा चत्तर तो म्हनै
देख अणदेखौ कोनो
आफरो चौढयोड़ा लोगा
म्हारा घणाई लुक्खा लाड करिया
    अणूतो सोखा दोवी
नै भोजपत्तर लिखियो···········

पंडत "सर्वधर्मान परित्यज्य
    मामेकं शरणं व्रज
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो
    मोक्षयिष्यामि मा शुच."

डूंणियो मोख नी मिळियौ, मिळिया
भुजबळ रा घणी
म्हारी नसा उतारी
म्हारै काळजा नै छेक
परखी तरवारां री पांण
    म्हारा वीरा···········
··························
धीरज रै साथै ऊमर खूटी
वारा माथा तरणीज्या
खाई भठोठो हाथां, उठग्या
वणा'र भीतां काळजां री
    वां सगळा नै
पाधरा करतोई आयो
लस्कर राज रौ
    सेटर सू खूदघा ह्राका-ह्राड
    वजाया वैरीसाल नगारा

म्हारी खाल रा··············

गैरिया राख राज री देग में
पका काळ रे भट्ठ···फकीरा
करियो मंणामेण
मिनख जमारो डूणिया···भइ

हुयो गिस्टियो मानखो
पस एड्या पस हाथ···फकीरा
कुण कोना ए डोळ
पूछे दाना डूणिया···भइ

जका न देखी कळपतो
चीतो काया कळप ··फकीरा
आखर रच्या अणूत
आख्या मीच्या डूणिया···भइ

डूणियो ए हाल देख्या डूणियां रा
हेमायता रं डूक हाली
मरग्या घणाई भैसाण ग्या'र
पल्लो लगायो जको
वारी वळगी आगळचा
पण जुग री सभना रा थंभा
जकां हला'र देख्या
आख्या-कलमां मू जका
नीवा वजाई-ठोकी
काळ रा जड़िया
किंवाड़ पड़्या
वेडवां घणकोज टूटी
संचन्नण हुयग्या
म्हारा कळाप नै कळपतो जूणा

अघोरी लोई सू माडणा पड़िया चितराम
'फांसी रा तखता'
'आदि विदरोही'
फूचक-फारटजी नै
चेखौजी-गोरकी नै
उतारणी पडी आख्यां सू
दूणिया री
होंणी री आखरमाळ
लिखारं पेमचन्द नै
जकाई वांची
किचरीजी जीभ बत्तीसी नीचै
घटणावा री घट्टी में
पिसीजतौ ई आयौ है दूणियो
उडती फाक, किरकिर तो
देखो व्हैला
ओ वोई है दूणियो

दूणियो भाठा सू होती आखेटां
हू वी टैम जिलम्यौ
वेदा मडीज्यौ
करी टीकावा रिसिया
भात-भात राख्यौ
म्हनै पुराणा
सकर-रामानुज आया
तिलकजी-गाधी आया
पाठा फोर
फोर पाठा वाच्यौ म्हनै ई
वाचणो जाणतो
थें भी वाच्यौ व्हैला :
की समझ्यौ व्हैला

मजूरां रौ टोळ हूं के वाचूं जोगिया !
भळकोई भळको
देख्यौ आखरां रौ
म्हारै सूं वोळा आंतरै
पोथ्या रा डूंगर जोगिया !

आखै दिन
फावड़ो-करणी वांचू
रात नै टाट ओढ्यां
कुरळाता हाड वाचूं जोगिया !

लारलै जमाने में
अखाड़े रा लूठा कवि हा
सरसुत वेंवती मूंढै सूं
थें भी तो
सुणी व्हैला जोगिया !

अघोरी अणभणियां घोड़े चढ़ै भणियां मागैं भीख
थे तो मतो भणिया
थे म्हारी सुणिया—
मिंदरा-मसीत रा धरमराज जी
तखत विराज्या
रामराज जी
मोको पड़िया आं दोनां नै
राख आंट में
धनपतमलजी
अजू तलक तो
वळपड़ती लीकां पाड़ी है ।
गुड़ री वातां रया कंवता
पण गुरां
देख्योई कोनी

ऐड़ खा'र
हुया औतार-गुणीजन
रंग-वदरगा झीणा कागज
सांटचौडे मंजे रौ
गेडो दे'र कैवता रया, उड़ाओ
सुपनां रा किन्नाई किन्ना
लडो-लडाओ
पेच ढील में·······
किसाक वणिया
खूब वणाया·······दूध सू
वाळचौड़ो हू···········
भल-भल कैवू
थे मती भणियां
थे म्हारी सुणिया

हूणियो आ·····आही तो ही वा कैवत
म्हारै कानां मे पड़गी
डूजा दै दाव राखी
रगां रमाई
वो दिन'क आज दिन है
देखलै······ऊमर पलटी
जमानो पलट्यो, सोचण-
परोटण रो वैवार पलट्यो
नी पलटी
लखणां री लाडी
म्हारी समझ नी पलटी
छवीलो घाटी सू
आंचळियै फळसै री
फेरचां देवै आज ताई
ईं सू आगै

हूं ई रयौ रे वीरा
कौरवा रौ वाप
गठजोड़ो कांकर खोलती
म्हारी सतीं लुगाई

गेरिया खण-खण करते तेल सू
चलै गिस्त री रेल…फकीरा
छोडा आखर ले'र
बण्यो डलेवर दूणिया…भई

पाणी झुर-झुर मूकग्या
रेत-कंवल रा नैण…फकीरा
देख्या सूना डेर
उग्या कोकरू दूणिया… भई

लीला मडसी काळजै
खुमसी बूठा वेंण…फकीरा
राख्या एक उडीक
जी तो जाग्यै दूणिया…भइ

घटाऊ ए वाण्यांवाळा भी जबरा है
लाये कठै सू चुग-चुग
बैठे हाडो-हाड
दिनूगे आ'र ऊभो
देखलै सूई सिंख्या पड़गी
रासन कसो क हाथ लाग जावै
ओ पीसणो तो रोज रो
तनै ई धूणी माथै
धड़-धड़तै देख्यो, बकारयो
तू तो फगग-फगग बोलारो

वैराग्या जेड़ी
वाण्या बोलै
ग्यांन री मैमा अकूती
लावा-लावा धोक··· ·
ओ कुण है······ओ···
मोगा मंढी सौ
तूं भगत बणाण लाग्यौ कई

हूंणियो वाको बाळ थारो
ओ तो नाटकिया रौ वेलो
पूछं है
म्हारी जात-गोत-नांव
म्हनै परचा वंठा'र
तमासो करमी चोभाटे
मिनख देखसी
देख वजासी ताळया···हूऽऽऽ

हामजी एक बात तो बता हूंणिया
तू बोल्यो होनी
हूंणिये बिना नी होया
ना होवे कैरा ई तमासा
म्हे रमता तो बाळी देखी
घूमर नोटक्या देखी
बोलते पडदे माथै
नित नूवो सनीमा देखू
पण म्हनै तो
कठैई नी दीस्यौ
तू बनावै जिको हूंणिया

हूंणियो तो तू कुण है पछं
लाट साव—

री जायोडो'क
रंगगी कच्ची रिगस
धारी अकल
कतरो वार कयो तनै
आखो दुनिया में
सगळा नू वेसी हूणिया

हामजो पण म्हं नी जाणू वांनै
वे म्हनै नी जाणै
काकर हुइजे अरू-भरू

हूणियो नू नी जाणै हुणिया नै
हूणिया तनै नी जाणै
आ तो सैणारी सैणाई'क
हूणिया रै
काच नी लागै कदै हाथ
नी देखलै कदै
घुदराई डोळ
रचताई जावै कौतक
चतर सुजाण
कदै नीं होंण देणो सजोग
सगळां हूणियां री
आपां हूणियां नै
ज्यां-ज्यां नचावै
राज पड़सी
उघाडा राग्र लीलां उपाड़
की तो लियां फिरै
अतस री दोठ आळा,
कमतरिया आग्ररां रा
उठायो जियां

चिल्ली रौ पाब्लो
तुरकी रौ हिकमत
पेरिस रै सेजान रंगिया
यौरप रा सगळा रंग
आपां माथै

अघोरी सुण-सुण देखता
तपिया उकळियां
उफाणी खा'र साटग्या गलीचा
उतारग्या भोडळ
राज रै चेरां सू
तत्ता हुयोड़ा हूणिया
कांधै उठायां फिरिया
पेमचंद-मजाज-फैज
वां सू उतरियौ भारो
हाथां-हथाळी ले'र चालै
नूवा लिखारा···ई खातर ई भटका मारा
मुंबादेवी री मुंबई
काळी माई री हवड़ा रेल सू पूगां
ढीले खीला आळी दिल्ली
पछवा चालता-चालता
'आ रम्मां वीकाणै'

नाटकिया-1 कितनी बार सुना-बांचा है
थोड़ा तो भारी है
नया नायक···पर
और पात्र तो दब जाते हैं

नाटकिया-2 कुछ संवाद अधिक कड़वे हैं
निखर नहीं पाएगा अभिनय

भले हमारे कलाकार
पूरा दम मारे

नाटकिया-1 नाम भी तो रखा हूणिया
हूणिया ……'अगली' लगता है
निरा अटपटा
नहीं जमेगा
पब्लिक के होठों पर

नाटकिया-2 'कन्वे' भी होना है मुश्किल
उलझ गई है 'थीम'
खेल दिया तो…………
अखबारों में रगड़ाई होगी

नाटकिया-1 दूसरा 'शो'''शो'''फिर
घाटा तो सहलें पर
'पबलीसीटी' भी तो
बहुत बड़ा माने रखती है

नाटकिया-2 तब इसे छोड़ दें
लिखवा लाए नया थ्री गजब से
चलें अभी ही……………

हूणिया ऐड़ हा कई
थारा नाटकिया वेलो
निरा मुलकिया लाग्या
लै चटखारा
वात्यां रा कारीगर उठग्या
पल्ला झाड़'क
कसतो लागै
की आचो ताणो हूणियो

हामजी हा भइ, हा तो गई
पण आ तो ऊभा-ऊभा वाता करो

गयाई परचा
नाटक तो कियोई कोनी

हूणियो थारा ए बेलो तो
ग्यारसिया-बारसिया लाग्या
ए के करसी
आज तो हूंई सुणासू तनै
बाजर रै खीच
खोखा भुजिया
पापड़ जेड़ोई ख्यात
धोरां निवायौ
हरखूजी बखाणियौ हूणियो
ठैर, तू अठै हो बैठ
हू ओ गयो'र
ओ आयौ
अठैई रयै भला···जाए न·· हाऽऽऽ

हरखू जी ! ओ हरखूजी···!
सूई सिझ्याई
नीदया सुड़कावै दीसै
हरखू जी ! ओ हरखूजी···! ओ···

लिखारोजी कुण है···कुण है भाई···

हूणियो ओ तो हूँ हूणियो हूं, आडो खोलो···आडो···

लिखारोजी हूणियो ! कुण हूणियो···!
कठै सू आयो है भई
निरो ग्याळो लाग्यो
इसो कई काम पड़ग्यो···

हूणियो बस···थेई नो पिछाण्यो म्हनै

नींद में ह्रा कई…
हूं हूणियो हूं…वोई…वोई ओ
जिकं नें कदेई
होरी कंवो
गोवर…गोवर…हेला पाड़ो
पतो नी कतरा-कतरा
नाव राखो म्हारा
थे, थांरी खाप रा लिखारा
पण रैवूं हूं तो हूणियोई

लिखारोजी अरे तू है के
आ भई आ…वंठ
वोळा दिनां सू आयो
एड़ो कई काम पड्यो

हूणियो विना सुवारथ
कुण कैनें पूछे हरखूजी
थे वखाण्यो हो नी
एकर हूणियो………
यूझा री वंडी
सिणियां रै मूंते री
धोतियां पैरया
काटां री पाळ ऊभो
माडधोड़ो वूक
पीवनो जांतो काळ
वोई हूणियो
दे दो म्हने थे आज
गैर रै चोकलिये
सोंग सज्या मोटयारा
नाटक नी चोती है

म्हारी है रातवासो वठै
वे म्हनै परचा वेंठासी
नी वणूला, दूध में पड़ियौड़ी माखी
छोड़ू नी चौकलियो
हूंई हुजासू नाटक
वांच सू, सुणा सू, देखू
किसो पताळ लासो फोड़
म्हारै परवार कोई नाटक
वस'' म्हनै तो
छाणा चुगतो एड्या घसतो
थांरै लिख्यौड़ो हूणियो''''''''—

लिखारोजी थारो है'''ले लै तूई
थैंई लिखायो, वाचै,
सुणाए, ओ लै'''पण'''
अबकै तो पाछो वेगो आए
सुणतां-सुणतां
कती ठडो-ताती आंख्यां सू
देखै तनै लोग
वानै देखतां तनै
कतरा वठोठा आवै
क हियो हबोळा खावै
मठोठो अमूजै हायां''''''''
वीती वताणं आज्यै
आए भला'''भूल ना जाए

हूणियो हरखूजी रो हूणियो
ओ हरखूजी रो हूणियो
भणै हूणियो सुणै हूणियो
हरखूजी रो हूणियो

सुण रे डूणिया………
म्हारो नांव डूणियो
हूं जुगाँ-जुगाँ सू डूणियो
रयो सइकाँ
पण नईं जनम सू डूणियो
कदे कवीले रे सिरदाराँ
राजा पंचा और ठाकराँ
सेठाँ गरूआ अर वेपारयाँ
हाकम मोर मुसद्दों
कदे सुपाई' थाणेदाराँ
सगळाँ हाथ रळा'र
वणायो भूणियो
मरजी आई जियाँ फिरायो
जीत्यो घूम्यो
मर-भर घूम्यो डूणियो
हूं डूणियो……
औं दे'र मिनख रो नांव
वणाया राख्यो दूणियो
भरताई आया टीपाटीप'क
ऊधीजण नै हवेल्यां गढ़ आगै
हूं म्हारे आंगणिये
धड़-धड़ खाली दूणियो
हूं डूणियो……
बात बीतगी राजावाँ री
वाँने तो ……वाँने तो………

सेरिया पैला राणी जामती
अब जामै संदूक…फकीरा
राजा वेई राज
गाभा वदळ्या डूणिया…भइ

विना निसरणी रा वण्या
    लोकराज रा मैल…फकीरा
देखै चकरीवंव
    तीस वरस सूं हूणिया…भइ

पाँचै वरसे जेवड़ा
    लटकै वजै चुणाव…फकीरा
लोकराज रै मैल
    लूठा पूगै हूणिया… भइ

अघोरी   *सुणलै हूणिया, सईं वाण्या भी*
कळपीजती वोलै…हां तो हूं
कठै वाचतौ हो…
वात वीतगो राजावां री
    वानै तो रातीदो आवै
पण आज आपणा राजा
नेता वजै चुणीज्या
    मण-मण वोटा रा
ताज धरचोड़ा मतरी
आरै लारै
राज करणिया सतरी
    डूवता सू नेग मांगै
हवाजाज सू देखै
पाणी मे धरती डूवगी
जनता रै दुख सू मोटो दुख
कुण जाणै
    कुण सोखो-दोखो
लारै मू ई तखत खोचलै
कूण भरोसो करै
    वोट री आंधी

दिखणादे जाती पूरवले पलटै
सत खुरसी रो
साथ जिता दिन
परवारा री पूठ बांधता
लोक लाज रै
राजावा रा डोळ देखतो हूणियो
ओ हूणियो……हूं हूणियो…
राज वळ, वोट वळ
सवसूं मोटो नोट वळ
विणज जावतो वाप देयग्यो
दखल राज में
कैयो हाथ पोलो कर
राजा लारै सेठ चालै
सेठ लारै राजा
खुलता जावै इंमा-दिया
कमग्या रा दरवाजा
इंदर दूझै…भूत कमावै…
दूझै इंदर…भूत…

गेरिया कळ पुरजा हाका करै
गोग्रै वयां हिसाव…फकीरा
फड़कै जद-जद होठ
जड़ै किंवाड़ा हूणिया…भइ

हाका करतां रा फटै
पेट काळजा रोज…फकीरा
बन्दूकां कानून
तीया देवै हूणिया…भइ

हूणियो सत फरमाद वाप जी मराज
मथेर वन्नामि…

थेइ देख्या…म्हेइ देखू…आंरा तो
लाखा माथै लेख चालै
ठेका चालै ब्याज चालै
मील्यां चालै मोटर चालै
मतरी सू हेत चालै
हाकम रै लगायौड़ो गेर चालै
साथै दवा डागधर चालै
सरकार सरकता की देर लागै
चिल्याई चिल्या खावै
क्या फोरोजण
छापा रै सुपनां सीजै
हड़तालां में
रोज री कमाई छीजै
पेट री ताल्या खोल
घेरे मजूर तो
ठिकाणा बदळै
साथै कूकरिया भाजै
भूखां री मजूरी सू
हाडां सू पसीणे सू
कुत्रधी री ठगाई सू
वाणीके री चतराई सू
सिंचीजती सेठाई री हेठाई सू
काळा-कोज्ञा-चितकबरा
नकसा देखें हूणियो
हूं हूणियो…

अघोरी राजा रया न राणी
भरणोई पड़ियो पाणी
ठरग्या ठाकर ठकराई

दोरी भार वखत री
        वाजार विकलो
भळै करै सेठाई
खुरसी सू उतरया मंतरी
पापड़िया पोवै
क्या धोय निचोवै
म्हारै सो नागो हूणियो
ओ हूणियो···हूं हूणियो···

गेरिया — गोठ योजना री करै
        सोनो रूगो राध···फकीरा
चाखण में सो जोम
        झोळ पुरसदै हूणिया···भइ

वटिया आलू प्याज सू
        जगी जेट जहाज···फकीरा
देखै आंख्यां फाड़
        हवा खावता हूणिया···भइ

भापणआळी मील में
        रोज बुणीजै थान···फकीरा
मसां आदमी दीठ
        खफण लंगोटी हूणिया···भइ

हूणियो — मिनखां रै पेटै में
        सिरै लिखीजै
आखै कीड़ो नगरै रो धोक वापजो···
जूण नई भारो ढोवां हां
माऊ नंई भारा मारो···
धन-धन तो वा जामण'क

सठवाँ सूठ खाई
जेरा जायौड़ा पूतां
मरणै सू पैलं तक
छाँटी हकमाई
हाकम रौ जमारौ अक्खौ
छोटै सू मोटो
मोटै सू ऊंचो हाकम
एकै-दूजै री पक्खा-पक्खी
मानखे रै कुनबै सू आज ताँई
चालो, चालै रे भाया
हाकम हिम्मत री हकमाई,
चालेली दडाछट
आगोतर ताँई···आगोतर···

गेरिया हाकम री हाथै कलम
दिन रतौंदो होय···फकीरा
लुळ-लुळ करै सलाम
रात तावड़ो दूणिया···भइ

हाकम री आँख्यां अजब
बाँचै मोर अधार ··फकीरा
तावड़िये सौ साँच
लगै फारसी दूणिया···भइ

दूणिया वोलै सान वाई न्याल वापजी !
म्हारी तो काळी कामर
चढै नी दूजौ रंग
पण पीळे माथे लाल
गुलाबी नीचै काळो चढ़ाता
निराई दीमै
लोगां री खातर वणिये राज मे

नेतावां रा कानूनां रा
दसूई रग दीसै
किरड़ो वदळे सात रग
लाखां-लाखां मे लूठै
हाकम रा हजार रग
खूजा में भरिया राखै होकडा
धन विसणू जी धन विरमा जी
यम-यम मा' देव
राज रो डडो
तीनां री मैमा अपरपार
एक मे तीन तीनूई एक
हाकम एकलो एकोहम''

पंडत ॐ पूर्णमदः पूर्णमिद,
पूर्णात्पूर्णमुदच्यते,
पूर्णस्य पूर्णमादाय-
पूर्णमेवावशिष्यते'''

सगला सागै ओम हाकम देवा प्रभु ओम हाकम देवा

तू भेद किरपाल'क छण टूठै-रुठै
प्रभू छण टूठै-रुठै
हाजरिया नं पळ मे पड़पोता देवा' ओम'''

जका न समझै सेन्या नेग नई देवै
थारो नेग नई देवै
सड़कां माथै वांरा तू लत्ता लेवा ''ओम

जका न मानै केणो सोध नई चालै
थारी सोध नई चालै
भलां-भलां'रा वट काडो थे काडो केवा'' ओम

खलक-फलक में बाजै थरोई डंको
प्रभू थारोई डंको
रासन रा सुरगाँ रा थे परमट देवा…ओम

नासवान जग जूण जमारो अजर अमर तूई
प्रभू अजर अमर तूई
मारणियौ तारणियो तूई सुध लेवा…ओम…

लिखी हुरखियै भणी हूणियै
आ हाकम मैमा लोगाँ, आ हाकम सैमा
वाँने मिळिया मिळसी फोड़ाँ रा मेवा…ओम…

ओम हाकम देवा, जै हाकम देवा



हरीश भादानी

जलम—11 जून 1933

हिन्दी अर राजस्थानी रा जाण्या-माण्या कवि। आज तांई छोटी-मोटी पन्द्रै रै लगभग पोथ्यां प्रकाशित।

1961 सूं लेय'र 73 तांई हिन्दी साहित री मासिक 'वातायन' रो संपादन।

ठिकाणो : छबीली घाटी
बीकानेर-334001